निनाद ललित कला समिति छिन्दवाड़ा

अध्यक्ष–आनंद बक्षी

सतपुड़ा एक्सप्रेस

गीत गज़ल संध्या ...

निनाद ललित कला समिति ने सजाई गज़लों की महफिल

सुरों का अलाव रूह तक तपिश

सतपुड़ा न्यूज,छिंदवाड़ा।

गुलाबी ठंड की पुर हसीन रात में सुरों का अलाव ऐसा जला की उसकी तपिश रूह तक पहुंच गई। सुर और साज की इस महफिल में रात का तीसरा पहर कब शुरू हो गया, किसी को पता ही नहीं चला। शुक्रवार-शनिवार की दरम्यानी रात ये महफिल लाल बहादुर शास्त्री स्कूल प्रांगण में निनाद ललित कला समिति के प्रयासों से सजी थी।

निनाद ललित कला समिति द्वारा आयोजित गीत-गजल संध्या में मशहूर फनकार पं. अश्विनी शर्मा ने अपनी बेजोड गायकी के फन से सुनने वालों को दीवाना बना दिया। सुरों के कारवां की शुरूआत संत कबीर के भजन 'झीनी-झीनी रे चदरिया...'से हुई। पूरी लयकारी के साथ सुरों के उतार-चढ़ाव से भरा यह संगीत का कारवां सुनने वालों के कानों में मिठास घोलते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ने लगा। अगले पड़ाव में बारी आई अख़्तर नफीस की गज़ल 'कभी साया है, कभी धूप मुकद्दर मेरा, होता रहता है कर्ज़ बराबर मेरा...' पं अश्विनी शर्मा ने अपनी कशिश भरी आवाज में जिस नजाकत और नफासत से इस गज़ल को पेश किया वह वाकई काबिले तारीफ था। शहजाद साहब के लिखे अशआर 'खुली जो आंख तो न वो था, न वो जमाना था दहकती आग थी, तनहाई थी, फसाना

था...' सुनाकर श्रोताओं के जज़्बात जगा दिए। अता रायपुरी के कलाम 'जिस घड़ी ख्वाबों के साए में रहा जाता है, मेरे कमरे में कोई धूप बिछा जाता है...' सुनाकर अपने महबूब की शख्सियत का नुमाया पेश किया।

मशहूर शायर इब्ने इंशा की गज़ल 'शबनम के आंसू फूल पर, ये तो वहीं किस्सा हुआ...' सुनाकर पं अश्विनी शर्मा ने महफिल में रंग और नूर की बारिश कर दी। उन्होंने 'अच्छे इंसान तो दो चार मिले, बाकी सब मुझको रियाकार मिले...', 'रंजिश ही सही दिल को दुखाने के लिए आ, आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ...', 'गम बनकर तेरी आंखों से छलका नहीं मैं, रस्ते में हूं मुकाम पर पहुंचा नहीं मैं...', 'वादा ए इश्क में गिर-गिर के संभलते रहना, पांव जल जाएं मगर आग पर चलते रहना...', 'चलो हम जाम छलकाएं अभी कुछ रात बाकी है, सहर तक दिल को बहलाएं अभी कुछ रात बाकी है...', 'बुरा कह दिया या भला कह दिया, वो सब हमने जो कह दिया कह दिया...', 'शहरे आरजूओं में मेरी बात अजनबी, बिखरा हुआ वजूद है मेरी हर बात अजनबी...', ।

जैसी गज़लें सुनाकर लोगों की रूह में ताजगी भर दी। देर रात तक चले संगीत के इस सफर में पं अश्विनी शर्मा का जिन हस्तियों ने पूरी शिद्दत से साथ निभाया उनमें सितार पर एस आर शिबलीकर, तबले पर सतीश मिश्र और गिटार पर इकबाल अहमद ने अपनी उंगलियों के जादू से इस महफिल में चार चांद लगा दिए। निनाद ललित कला समिति द्वारा आयोजित गीत गजल संध्या का यह तेरहवां वर्ष गजल के शौकीनों के लिए एक यादगार पल बन गया। इन लम्हों में उन्होंने जो संगीत का आनंद लिया वह बेमिसाल था। यह हसीन लम्हें शायद ही कभी भुलाए जा सकें। कार्यक्रम का संचालन संगीत मर्मज्ञ आनंद बक्षी ने बेहद बेहतरीन अंदाज में किया।

विभूतियों को मिला सम्मान

गीत और गजलों से सराबोर इन लम्हों में शहर की ऐसी विभूतियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किए हैं। सम्मानित होने वालों में नवीन दुग्गड़, डॉ आर एच बग्गा, मेजर डॉ राकेश श्रीवास्तव, श्रीमती विस्मिता शाह, मो. युनुस और बाल प्रतिभा तरंग परिहार का नाम शामिल है। कार्यक्रम में विधायक दीपक सक्सेना, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विश्वनाथ ओक्टे, राशिद खान, राजू निमाड़े, आशीष त्रिपाठी सहित शहर के सुधि श्रोता उपस्थित थे।